



RAN - 2301000103033014

RAN-2301000103033014**S.Y.B.A. (Sem. III) Examination October - 2023****Sanskrit : Paper - VII****वैदिक वाङ्मय (ऋग्वेद)****Time: 2 Hours]****[Total Marks: 50****सूचना : / Instructions**

(१)

नीचे दशवेल निशानीवाणी विगतो उत्तरवली पर अवश्य लपवी.
Fill up strictly the details of signs on your answer book

Name of the Examination:

S.Y.B.A. (Sem. III)

Name of the Subject :

Sanskrit : Paper - VII वैदिक वाङ्मय (ऋग्वेद)

Subject Code No.: 2301000103033014

Seat No.:

Student's Signature

प्र. १ अ) टूंकमां जवाब आपो. (गमे ते चार)**(०८)**

१. 'जात्य स्वरित स्वर' ना केटला प्रकार छे?
२. वैदिक संस्कृतमां कया कया प्रत्ययो लागीने वैदिक संबंधक भूतकृदंतना रूपो बने छे.
३. मुख्य त्रण वैदिक स्वरोना नाम जशावो.
४. 'गायत्री' अने 'जगती' छंदनुं बंधारण जशावो.
५. 'अनुष्टुप' अने 'बृहती' छंदनुं बंधारण जशावो.
६. स्वरितना केटला प्रकारो छे? कया कया?

ब) पदपाठ करो.**(०२)**

१. अग्निर्होत कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः।
देवो देवेभिरा गेम्त्।

- प्र. २ अ) ऋचाओ अर्थदर्शक नोध आपी सानुवाट समजवो. (६ मांथी ३) (१३)
१. स नः पितेव सूनवेडगेन सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये॥ १.१.९
 २. यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत्।
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः॥१.१२.११
 ३. अवं द्रुधानि पित्र्यां सृजा नोडव या वयं चकृमा तनूभिः।
अवं राजन्पशुतृपं न तायुं सृज वत्सं न दाम्नो वसिष्ठम्॥ ७.८६.५
 ४. यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्मणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकंमहिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ १०.९०.१६
 ५. सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जान ताम्।
देवा भाग यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥ १०.१९१.२
 ६. जाया तप्यते कितवस्य हीना माता पुत्रस्य चरतः क्व स्वित्।
ऋणावा बिभ्यद्धनमिच्छमानोऽन्येषामस्तमुप नक्तमेति॥ १०.३४.१०

प्र. ३ 'वरुणसूक्त' (७-८६) ना आधारे वरुणदेवता विशे लभो. (१३)

OR

'पुरुषसूक्त' (१०.९०) ना आधारे पुरुषसूक्त विशे नोध लभो. (१३)

प्र. ४ टूंकनोध लभो. (४ मांथी २) (१४)

१. अग्निसूक्त।
२. उषासूक्त।
३. अक्षसूक्त।
४. नासदीय सूक्त।